ऐन फ्रैंक

ऐन फ्रैंक

महत्वपूर्ण तिथियाँ

12 जून 1929	ऐन फ्रैंक का फ्रैंकफर्ट एम मेन में जन्म
फरवरी 1934	ऐन के परिवार का एम्स्टर्डम हॉलैंड आना और ऐन स्कूल में भर्ती
सितंबर 1939	हिटलर की सेना का पोलैंड पर हमला और दूसरे विश्व युद्ध का आरंभ
12 जून 1942	ऐन को जन्मदिन पर डायरी उपहार में मिली. इसमें अपनी काल्पनिक मित्र किट्टी को वह पत्र लिखती है
6 जुलाई 1942	फ्रैंक परिवार एक गुप्त स्थान में छिप गया
13 जुलाई 1942	वैन पैल्स परिवार भी गुप्त स्थान में फ्रैंक परिवार के साथ रहने आ गया
16 नवंबर 1942	फ्रिट्ज़ फैफ्र गुप्त स्थान में आ गया.
4 अगस्त 1944	ऐन और गुप्त स्थान में छिपे अन्य सब लोग कैद
सितंबर 1944	कैदियों को पोलैंड में स्थित ऑष्विच्स बंधी-शिविर भेज दिया गया
अक्तूबर 1944	ऐन और मार्गोट को जर्मनी के बर्गन-बैल्सन बंधी-शिविर ले जाया गया.
फरवरी / मार्च1945	ऐन और मार्गोट की टाइफ्स से मृत्यु
वसंत 1947	ऐन की डायरी डच भाषा में प्रकाशित. अंग्रेज़ी में इसका प्रकाशन 1952 में हुआ

बहुत सुबह, जुलाई के एक दिन, जब हल्की वर्षा हो रही थी, एक छोटी लड़की और उसके माता-पिता अपने घर से निकले और जल्दी-जल्दी शांत गलियों में चलने लगे. हालांकि गर्मी थी, उन्होंने सर्दियों के मोटे-मोटे कपड़े पहन रखे थे: लड़की ने दो बनियाने, तीन जोड़ी जांघिये, एक ड्रैस, एक स्कर्ट, एक जैकेट, एक छोटी पतलून, दो जोड़ी मोज़े, जूते, ऊनी हैट, स्कार्फ और कुछ अन्य चीज़ें पहन रखी थीं. कुछ कपड़े और दस्तावेज़ उन्होंने अपने बैगों में ठूस रखे थे. बैग भारी थे और पानी भी बरस रहा था, लेकिन किसी ने भी उन्हें अपनी गाड़ी में बैठने को न कहा. लड़की नहीं जानती थी कि अगले दो वर्षों बाद ही वह बाहर खुले में फिर चलेगी. उस छोटी लड़की का नाम ऐन फ्रैंक था.

ऐन फ्रैंक का जन्म जर्मनी में हुआ था. उसके माता-पिता, ऐडिथ और ओटो फ्रैंक, जर्मनी में रहने वाले यहूदी थे. वह एक छोटे से नगर, *फ्रैंकफर्ट एम मेन*, के रहने वाले थे, जहाँ उनका परिवार पीढ़ियों से रह रहा था. फ्रैंक परिवार की बड़ी बेटी मार्गोट थी. फिर 12 जून 1929 को ऐन का जन्म हुआ. फ्रैंक परिवार का घर एक सुंदर इलाके में था जहाँ ऐन प्रसन्नता से बालू के गड्डे में या फिर अड़ोस-पड़ोस में रहने वाले बच्चों के साथ खेलती थी.

लेकिन माता, पिता और मार्गोट के स्नेही संसार के बाहर जो जर्मनी था वहाँ कई गलत घटनायें घट रही थीं. लोग नौकरियों से हटाये जा रहे थे और उनके पास खाने और कपड़ों के लिए पैसे न थे. लोग डरे हुए थे और गुस्से में थे. वह एक ऐसा नेता चाहते थे जिसने उनकी समस्याओं को खत्म करने का वचन दिया था. लोगों को एडोल्फ हिटलर, जो 1933 में सत्ता में आया, ऐसा ही नेता लग रहा था. उसने जर्मनी के लोगों को कहा कि वह संसार में सबसे श्रेष्ठ थे. उसने जर्मनी की सारी समस्याओं के लिए यहूदियों को ज़िम्मेवार ठहराया. शीघ्र ही वह ऐसे कानून बनाने लगा जिनके द्वारा यहूदियों के साथ भेदभाव होने लगा. हिटलर और उसके समर्थकों को नाज़ी कहा जाता था, जो नेशनल सोशिलस्ट को संक्षिप्त रूप था.

ऐन के पिता को लग रहा था कि नाज़ी जर्मनी में यहूदियों के लिए रहना निरापद न था, इसलिए जब ऐन चार साल की हुई तो अपने परिवार को वह एम्स्टर्डम, हॉलैंड ले आए. फ्रैंक परिवार को अपना नया घर अच्छा लगा. घर समुद्र से अधिक दूर न था और गर्मी की छुट्टियाँ उन्होंने सागर-तट पर बिताईं.

जब पाँच वर्ष की आयु में ऐन स्कूल जाने लगी तो वह बहुत जल्दी पढ़ना-लिखना सीख गई. वह होनहार विद्यार्थी थी और उसके कई मित्र थे. क्योंकि वह उत्साही और स्नेहशील लड़की थी, उसे स्कूल के नाटकों में प्रमुख भूमिका दी जाती थी.

हिटलर की सेना ने 1939 में पोलैंड पर हमला कर दिया. यूरोप में युद्ध आरंभ हो गया और शीघ्र ही हिटलर की सेना हॉलैंड पहुँच गई, जहाँ ऐन और उसका परिवार रहता था.

युद्ध चल रहा था, लेकिन फिर भी ऐन अपने मित्रों के साथ मज़े कर रही थी. इतिहास, प्रसिद्ध कलाकार, बिल्लियाँ और कुत्ते ही ऐन के प्रिय विषय-वस्तु थे. और इनके अतिरिक्त उसकी डायरी, जो उसके तेहरवें जन्मदिन पर माता-पिता ने उसे उपहार में दी थी, उसे बहुत प्रिय थी. यह उपहार पा कर वह बहुत प्रसन्न हुई थी और उसे लगा था कि डायरी उसकी सबसे अच्छी मित्र थी. वह उसे कोई नाम देना चाहती थी, इसलिए डायरी की हर प्रविष्टि पत्र के रूप में थी और 'प्रिय किट्टी' से आरंभ होती थी.

किट्टी को पत्र लिखते हुए, ऐन ने वर्णित किया था कि किस तरह हिटलर के यहूदी-विरोधी कानून हॉलैंड में भी लागू किए गए थे. धीरे-धीरे यहूदी अपनी नौकरियों से हटा दिए गए थे और उनकी संपत्ति छीन ली गई थी. हर यहूदी को, जिसकी आयु छह वर्ष से अधिक थी, अपने कपड़ों पर छह कोनों वाला 'स्टार ऑफ डेविड' पहनना पड़ता था. यद्यपि ऐन को पता न था, लेकिन उसके पिता परिवार के साथ कहीं छिपने की योजना बना रहे थे.

जुलाई 1942 में ओटो फ्रैंक अपने परिवार के साथ एक गुप्त घर में चले गए जो उस इमारत की पिछली तरफ था जहाँ से ओटो फ्रैंक अपना व्यापार चलाते थे. ऐन इसे 'गुप्त उपभवन' बुलाती थी. इसके प्रवेश द्वार को किताबों की एक ऐसी अलमारी से ढक दिया गया था जिसे इधर-उधर किया जा सकता था और जो उनके वहाँ आने के बाद ही बनाई गई थी. सिर्फ सात लोग ही जानते थे कि फ्रैंक परिवार वहाँ छिपा था. उन में से चार ओटो के ऑफिस में काम करते थे. और जब भी संभव होता यह मित्र उनके लिए चोरी-छिपे खाना और कपड़े ले आते. अगर वह पकड़े जाते तो जर्मन सैनिक उन्हें मार डालते.

गुप्त उपभवन में फ्रैंक परिवार को आए एक सप्ताह ही हुआ था कि मिस्टर और मिसेज़ वैन पैल्स और उनका पन्द्रह वर्ष का बेटा, पीटर, भी उनके साथ रहने आ गए. ऐन को प्रसन्नता थी कि पीटर अपनी बिल्ली, मओस्की, को साथ लाया था क्योंकि ऐन को अपनी बिल्ली घर में ही छोड़नी पड़ी थी. नवंबर के अंत में उस छोटे से दल का अंतिम सदस्य, दाँतों का डाक्टर, फ्रिट्ज़ फैफ्र, उनके साथ उस गुप्त जगह में रहने आ गया.

ऐन के लिए छिप कर रहना सरल न था. वह अकसर अकेलापन महसूस करती थी और उकता जाती थी. वह अपने मित्रों के लिए, अपने स्कूल के लिए और सबसे अधिक अपनी स्वतंत्रता के लिए लालायित थी. इतनी छोटी जगह में उन लोगों का साथ एक साथ रहना कठिन था, क्योंकि वह एक-दूसरे के लिए लगभग अजनबी ही थे. कई बार उनमें बहस हो जाती थी. ऐन अपनी माँ और बहन के साथ झगड़ बैठती थी. उसे लगता था कि उसके प्यारे पिता भी उसको समझ न पाते थे. अपनी सारी निराशा और उदासी को अपनी डायरी, किट्टी, जो निरंतर उसकी मित्र थी, में वह लिख देती थी.

ऐन ने किट्टी को बताया कि गुप्त उपभवन में आने के बाद शुरु के कुछ दिनों में उसने कैसा महसूस किया. अपने मित्रों की, उस काले साइकिल की जिस पर सवार होकर वह स्कूल जाती थी और उस कमरे की जहाँ वह बड़ी हुई थी, कमी उसे खलती थी. क्योंकि फ्रैंक परिवार को डर था कि कहीं उनका भेद न खुल जाए, इसलिए दिन में वह दबी आवाज़ में बात करते थे और दबे पाँव चलते थे. रात के समय ही वह सतर्कता थोड़ी कम कर पाते थे, हालांकि तब भी उन्हें ध्यान रखना पड़ता था कि खिड़कियों से कोई उन्हें देख न ले. अलग-अलग कपड़ों के टुकड़ों को जोड़ कर ऐन और उसके पिता ने कुछ परदे बना लिए थे और उन परदों को खिड़कियों पर लटका दिया था.

फिर भी ऐन बहादुर थी. अपने-आप को व्यस्त और प्रसन्नचित रखने का वह भरसक प्रयास करती थी. पढ़ने और स्कूल का काम करने में भी वह समय बिताती थी ताकि जब अंतत: वह स्कूल लौट पाये तो बाकी बच्चों से स्वयं को पीछे न पाये. उसने यूरोप के सारे राजाओं और रानियों के वंशावली बनाई और आशुलिपि भी सीखी. अपने प्रिय कलाकारों के चित्र देखना उसे अच्छा लगता था.

इन चित्रों को अपने शयनकक्ष की दीवारों पर वह चिपकाती थी. छिपे रहते हुए भी उनके जीवन में कुछ न कुछ आश्चर्यजनक और आनंददायक घटता रहता था, जैसे जब ऐन के जूते छोटे हो गए तो मिप गीज़, जो फ्रैंक परिवार की पक्की मित्र थी और जिसे पता था कि वह छिप कर रहे थे, ने उसे लाल रंग के ऊँची एड़ी के नए जूते दिए.

मियानी (ऐटिक) ऐन की प्रिय जगह थी, क्योंकि वहाँ एक छोटी खिड़की थी जिसे खोल कर वह तारों को, धूप को और सड़क के दूसरी ओर स्थित मीनार को देख सकती थी. ऐन और मार्गोट अकसर पढ़ने के लिए उस मियानी पर चढ़ जाते थे. और जब ऐन की पीटर से मित्रता हो गई तो दोनों वहीं बैठ कर बातें करते थे.

कभी-कभी मियानी में अकेले बैठ कर ऐन सोचती कि युद्ध के समाप्त होने पर जीवन में वह क्या करना चाहेगी. वह एक लेखक बनना चाहती थी. अपनी डायरी के अतिरिक्त वह परी कथायें और काल्पनिक कहानियाँ लिखती थी. उसने एक पुस्तक भी लिखनी शुरु कर दी थी जिसका शीर्षक था, *गुप्त-उपभवन की कहानियाँ और घटनायें.* जब उसे पता चला कि डच सरकार युद्ध काल की सब डायरियाँ प्रकाशित कर सकती थी तो वह अपनी डायरी की लकीरदार कागज़ों पर सफाई से नकल उतारने लगी. उसका सपना था कि एक दिन संसार के सब लोग उसके लेख और कहानियाँ पढ़ें.

यद्यपि वह संसार से अलग-थलग रह रहे थे, फिर भी ओटो के ऑफिस में रखे रेडियो पर वह दुनिया-भर के समाचार सुन लेते थे. रात के समय वह चुपके से उस कमरे में आ जाते थे और रेडियो चालू कर देते थे. जब ऐन ने सुना कि जर्मन हार रहे थे तो वह आशावान हो गई. उसने अपने डायरी में लिखा कि, इतना कुछ होने के बावजूद भी, उसका विश्वास था कि लोग दिल से अच्छे थे.

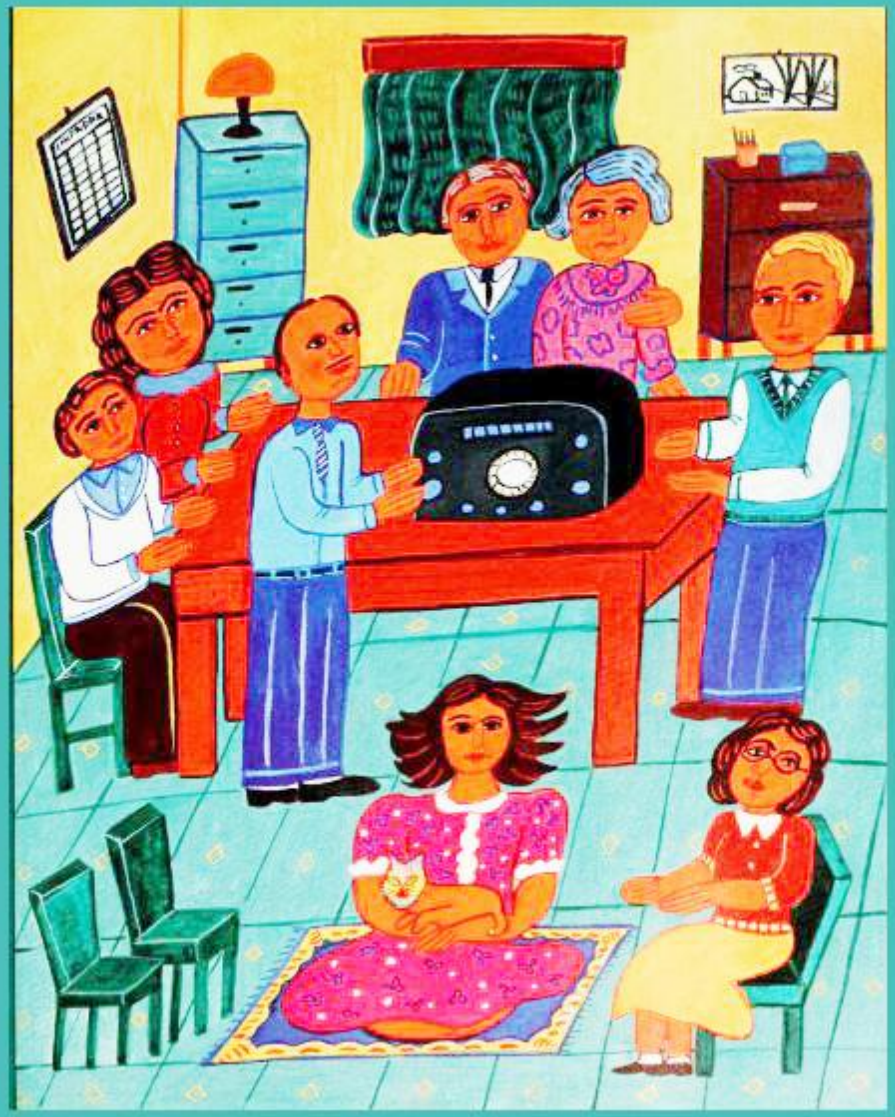

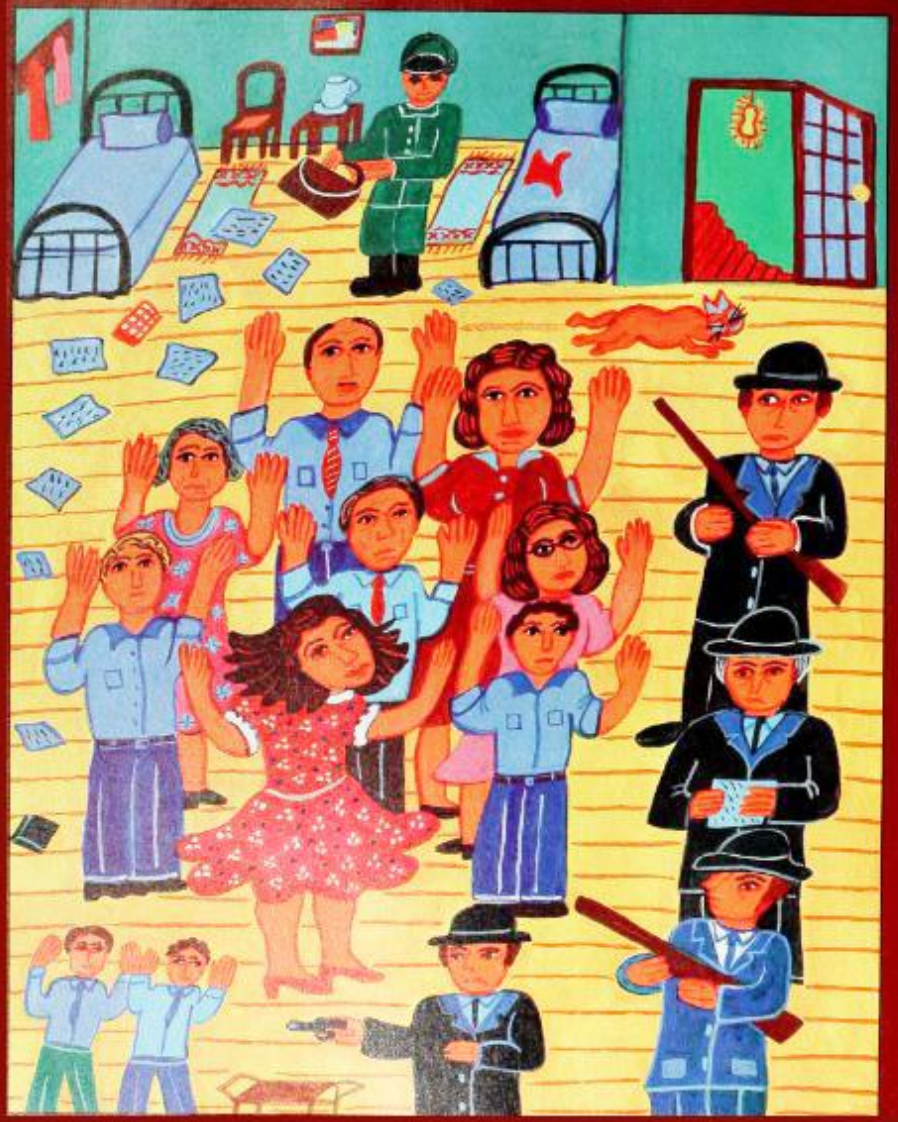

लेकिन फिर किसी को फ्रैंक परिवार के छिपने की जगह का पता चल गया और उसने पुलिस को बता दिया. 4 अगस्त 1944 के दिन उनके गुप उपभवन पर जर्मन और डच नाज़ियों ने छापा मारा. ऐन और अन्य सब लोग कैद कर लिए गए. फ्रैंक परिवार, वैन पैल्स और फ्रिट्ज़ फैफ्र को हॉलैंड में स्थित वैस्टरबोर्क बंधी-शिविर में भेज दिया गया जहाँ नाज़ियों के लिए उन्हें काम करना पड़ता था.

एक महीने बाद उन्हें पोलैंड में ऑष्विच्स बंधी-शिविर भेज दिया गया. वहाँ के हालात भयानक थे. ऐन, मार्गोट और उनकी माँ को बहुत थोड़ा खाना, पानी और बहुत कम कपड़े मिलते थे, लेकिन उन्हें खूब काम करना पड़ता था. उनके आसपास कई लोग भूख और बीमारी से मर गए. कई कैदियों को नाज़ियों तो ने ही मार डाला. अक्तूबर में दोनों लड़कियों को जर्मनी के बर्गन-बैलस्न बंधी-शिविर भेज दिया गया. उनके माता-पिता ऑष्विच्स बंधी शिविर में ही रह गए जहाँ उनकी माता, ऐडिथ, की अस्पताल में मृत्यु हो गई. उस वर्ष सर्दी लंबी और कड़ाके की थी और दोनों लड़कियाँ बीमार हो गईं. पहले मार्गोट की टाइफस से मृत्यु हो गई. फिर थोड़े समय बाद ऐन की मृत्यु भी हो गई. वह सोलह वर्ष की भी न हुई थी.

ऐन की डायरी और अन्य लेख गुप्त उपभवन में मिप गीज़ को मिले और उसने वह डायरी वगैरह संभाल कर रख ली. युद्ध के समाप्त होने पर ऐन के पिता एम्स्टर्डम वापस आए. जितने भी लोग गुप्त उपभवन में छिपे थे उन में से सिर्फ ऐन के पिता ही ऑष्विच्स की कड़ाके की ठंड में जीवित बच पाए थे. जो डायरी मिप ने उन्हें दी उसे पढ़ कर उन्होंने उस डायरी को प्रकाशित करने का निर्णय लिया.

ऐन की डायरी बहुत लोकप्रिय हो गई और कई भाषाओं में उसका अनुवाद किया गया. क्योंकि उसके साहस और समझदारी ने लोगों को आश्चर्यचकित कर दिया, उसके जीवन की कहानी पर एक नाटक बनाया गया और जिस जगह वह छिप कर रहे थे उस जगह को म्यूज़ियम बना दिया गया. ऐन फ्रैंक की स्मृति आज भी लोगों के मन में जीवित है और उसके शब्द संसार के लाखों लोगों की प्रेरित करते हैं.

लेखक का नोट

शुरु में 1947 में ऐन फैंक की डायरी की सिर्फ 1500 प्रतियाँ प्रकाशित की गई थीं. शीघ्र ही जर्मन और फ्रैंच भाषा में उसका अनुवाद प्रकाशित हुआ. अँग्रेज़ी में पहला संस्करण 1952 में प्रकाशित हुआ. तब से यह डायरी पचास से अधिक भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी है. इसकी ढाई करोड़ से अधिक प्रतियाँ बिक चुकी हैं. शायद ऐन को आशा थी कि एक दिन उसकी डायरी प्रकाशित होगी, इसलिए उसने वैन पैल्स परिवार, फ्रिट्ज़ फैफ्र और दूसरे डच मित्रों के लिए फ्रज़ी नामों का प्रयोग किया था. प्रकाशित डायरी में फ्रज़ी नाम छपे थे लेकिन इस पुस्तक में मैंने असली नाम लिखें हैं क्योंकि अब यह नाम सुविख्यात हैं.

हालांकि मारे गए यहूदियों की सही संख्या की जानकारी नहीं है फिर भी ऐसा माना जाता है कि नाज़ियों ने लगभग साठ लाख यहूदियों को मार डाला था. यहूदियों के अतिरिक्त नाज़ियों ने कई और लोगों को, जैसे कि जिप्सी, स्लाव, कम्युनिस्ट इत्यादि को भी मारा था.

यहूदियों से गुलामों की तरह काम लेने के लिए नाज़ियों ने कई बंधी शिविर बनाए था लेकिन उन्होंने कुछ शिविर गैस के प्रयोग से यहूदियों को मार डालने के लिए ही बनाए थे. यह शिविर गुप्त रुप से बनाए गए थे और अधिकतर पोलैंड में थे. ऑष्विच्स का शिविर, जहाँ ऐन का परिवार कैद था, ऐसा ही शिविर था. चूंकि मार्गोट और ऐन ने वहाँ कम समय बिताया, तो संभव है कि नाज़ियों को वह युवा लगती थीं जो उनके लिए काम कर सकती थीं.

ऐन फ्रैंक की आत्मकथा लिखने से पहले मैंने अपने आप से पूछा कि बच्चों को यह कहानी सुनाने का क्या तर्क है. शायद बच्चों के लिए युद्ध, जातिवाद, मृत्यु जैसी बातें समझना सरल न हो, लेकिन गूढ़ बातें भी कभी-कभी उन्हें बतानी पड़ती हैं. इसी आशा से मैंने यह प्रयास किया है.

******